बोलते चित्र : अधूरी बातों को पूरा करने का ज़रिया

रुबीना ख़ान

बच्चों को अपनी रोज़मर्रा और पढ़ाई-लिखाई की दिनचर्या में कहकर व लिखकर अनुभव साझा करने के अवसर मिलते रहते हैं। लेकिन चित्र जैसे सशक्त माध्यम से अभिव्यक्त करने के मौक़े कम ही बन पाते हैं। लेख में शहरी वंचित तबक़े के बच्चों के साथ काम के आधार पर लेखिका ने बताया है कि बच्चों के साथ चित्रों पर कैसे काम किया जाए ताकि वे इस माध्यम में अपने विचारों को बेहतर अभिव्यक्त कर पाएँ। बच्चों से चित्र बनवाने के लिए विषय तय करने व चित्रों पर सार्थक बातचीत के कुछ तरीक़े भी इस लेख में प्रस्तुत किए गए हैं। सं.

चित्र वह माध्यम है जिससे किसी भी उम्र का व्यक्ति न केवल अपनी बात कह पाता है बल्कि उसकी ज़िन्दगी से जुड़े अन्य पहलुओं को भी इसमें बख़ूबी देखा जा सकता है। जब किसी बात को कहने, लिखने या बताने की मुश्किल सामने आती है तब चित्र एक अच्छे विकल्प के रूप में काम करते हैं। कभी-कभी चित्र केवल मज़ेदारी के लिए न बनवाए जाकर मुद्‌दों पर आधारित बनवाए जाने चाहिए; जैसे किसी परिस्थिति और उसका विवरण बच्चों को उपलब्ध करवाकर इसपर बच्चों के साथ काम करना। किसी परिस्थिति विशेष पर बच्चों के साथ काम करने के दौरान ही बच्चों की पहचान, उनके व्यक्तित्व की झलक भी इनमें नज़र आ जाती है। यह वह गतिविधि है जहाँ वास्तविकता के साथ ही बच्चे की कल्पनाशीलता को भी कहीं-न-कहीं जगह मिल पाती है। बच्चे की नज़र से इसे बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। पुस्तकालय गतिविधियों के दौरान मुझे कई बार इसे क़रीब से जानने का अवसर मिला है।

एक बार बस्ती बैठक के दौरान बस्ती स्तर पर बने बाल समूह (आज़ाद जुगनू क्लब) के बच्चों के साथ चर्चा करते हुए 'मेरी दुनिया' थीम पर चित्र बनाने का विचार बना।

हमने विषय तय किया कि अगर हमें अपनी दुनिया बनाने का मौक़ा मिले तब हम किस तरह की दुनिया बनाएँगे? उसमें क्या-क्या हो सकता है और क्या नहीं?

इस प्रक्रिया में 7 से 12 वर्ष की उम्र के 16 बच्चे शामिल रहे।

यह थीम बच्चों को थोड़ी अलग लगी जिसपर चित्र बनाने की उत्सुकता भी उनमें थी। इस थीम पर चित्र बनाने के दौरान वीर और रिमझिम द्वारा कुछ पन्ने भी फाड़कर फेंके गए। शायद उनकी सोच पन्नों पर उस तरह से नहीं आ पा रही थी जैसा वे सोच रहे थे। ख़ैर, वे फिर से अपने इस काम में व्यस्त हो गए। बच्चों ने जो चित्र बनाए वे इस तरह थे :

- परिवार, दोस्त और उनके पालतू जानवर एक साथ एक घर में रह रहे हैं।
- तालाब किनारे उनका घर है जहाँ वे मछलियों से बातें कर रहे हैं।

- घर में तारों से रोशनी की हुई है।
- रोते, उदास चेहरे हवा में उड़ते हुए उनसे दूर जा रहे थे।
- वे अपनी मनपसन्द खाने की चीज़, खिलौनों के बीच बैठे हैं।

समूह के हर बच्चे का प्रयास रहा कि वह अपना सोचा हुआ चित्र बना पाए, चाहे उसके लिए उन्हें थोड़ा ज़्यादा वक़्त ही क्यों न देना पड़े; इस कोशिश में कई बच्चों को अपने साथियों से किसी चित्र की आकृति को समझकर बनाते भी देखा गया। नितिन, रोहन, अकबर और मिष्ठी भी इसमें शामिल हुए जो पहले कह रहे थे कि हमसे चित्र नहीं बनते, हम नहीं बनाएँगे। बाद में वे ख़ुद से ही पन्ने लेकर चित्र बनाने लगे।

इस तरह के कई अनुभव बच्चों के बीच से मिलते रहे हैं।

ख़ुशी के पल

'सेल्फ़ इमेज' से जुड़ी चर्चा की अगली कड़ी में दूसरे दिन चित्र बनाने की गतिविधि कुछ सवालों के साथ शुरू की गई।

विषय रखा गया कि आपको जो काम करना पसन्द है वैसा करने को मिलता है तब क्या होता है, कैसा लगता है?

इस सवाल के जवाब में जो चित्र आए वो ऐसे थे... मुस्कुराते चेहरे, डांस करते और कभी हवा में उड़ते बच्चे, दोस्तों के साथ मस्ती और कहीं पानी के साथ शरारतें करते बच्चे।

चित्रों को बनाते वक़्त चेहरे के बदलते भावों से उनके मन की स्थिति भी समझ आ रही थी। दस वर्षीय छाया अपने में ही धीमे-धीमे मुस्कुरा रही थी, वहीं उसकी हमउम्र पूनम अपनी सहेली को देख शरारत से बार-बार पलकें झपका रही थी।

- ख़ुशी से जुड़ी बातों पर चित्र बनाते समय पेंसिल तेज़ी से चलती रही तो कभी पास बैठे साथी को बार-बार देख ही बच्चे मुस्कुराते रहे।
- मुश्किल परिस्थिति में उलझन भरे चेहरे के साथ बार-बार चित्र को मिटाते तो कभी माथे पर हाथ फेरते।
- इसी तरह दुःख या उदासी के लम्हों की बात, जैसे– कोई ख़ास चीज़ आपसे दूर हुई? या कब अकेलापन महसूस किया? इन सवालों पर बच्चे ख़ामोशी से सोचते नज़र आए, चित्र बनाते वक़्त कुछ उदास चेहरे, तो कुछ बच्चे पेपर से अपने आँसू साफ़ करते दिखे। उन बच्चों से इस गतिविधि के बाद ख़ासतौर से बात की। बच्चे अपने डर, अनिश्चितताएँ और बुरे अनुभव साझा करके काफ़ी हल्का महसूस करते हैं। जो बात चित्रों में अधूरी रह जाती है वह बातचीत से कुछ पूरी हो पाती है ऐसा मुझे महसूस हुआ।

इसी तरह 'बस्ती बाल मेला' के दौरान बच्चों के एक समूह के साथ चर्चा से निकले कुछ सवालों पर काम किया जिसमें आठ से चौदह वर्ष के दस बच्चे शामिल रहे। विषय रखा कि यदि हमें हमारी बस्ती, समुदाय से जुड़ी जानकारियों को चित्रों के माध्यम से किसी को दिखाना / बताना हो तो कौन-सी बातें इसमें ख़ासकर रहेंगी?

समूह में विभिन्न जनजाति समुदायों के बच्चे होने से उनकी चित्रों की कैफ़ियत भी विविध रही।

अगरिया (लोहार समुदाय)

इस समुदाय के लोग पीढ़ियों से लोहे से



जुड़ा काम करते आए हैं। इस काम के चलते ये कई-कई महीने बसेरे पर निकल जाते हैं जहाँ ये इनके द्वारा बनाए गए लोहे के बर्तन व औज़ारों को ठीक दामों में बेच सकें। इन कामों से जुड़ी महिलाएँ भी साथ जाती हैं।

समुदाय की बाक़ी महिलाएँ व किशोरियाँ वन विहार में घास काटने, खेतों पर काम करने जाती हैं। बस्ती के कई पुरुष व लड़के चाकू पर धार करने, दो पहिया वाहन पर वेल्डिंग मशीन रखकर फेरी लगाने का काम करते हैं। वर्तमान समय में कुछ लोगों ने पुराने काम न चलने के कारण अपने कामों में बदलाव भी किया है।

बस्ती की स्थिति अगर देखें तो कुछ कच्चे-पक्के घरों के अलावा यहाँ ज़्यादातर घर लोहे व टीन से बने हैं। ये घर मज़बूत हैं और इस सोच के साथ बनाए गए हैं कि बस्ती को विस्थापित करने की स्थिति में इन्हें कहीं भी ले जाना आसान रहे, क्योंकि यह अवैध बस्ती की श्रेणी में आती है।

बहरहाल, बच्चों के चित्रों की दुनिया में वापस लौटते हैं। इन सवालों पर बच्चों ने कुछ इस तरह के चित्र बनाए :

लोहे का सामान (झारा, छन्नी, चूल्हा, अमकटना, चाकू, इत्यादि) बनाते लोग, खेतों में काम करती महिलाएँ, पेड़ की छाँव में खाना खाते लोग, टेम्पो में सामान के साथ जाते लोग, बस्ती में खेलते बच्चे, पालतू जानवर, बकरा-बकरी, मुर्ग़ा-मुर्ग़ी के साथ बैठे बच्चे। बच्चों के बनाए चित्रों में ये सब हिस्से बख़ूबी दिख पाए।

इस समूह के साथ किए काम के बाद मुझे इसे और समझने की ज़रूरत लगी कि क्या किसी और समुदाय की जानकारी भी इस माध्यम से आ सकती है, तब दो अन्य समुदायों, नट और पारधी, के बच्चों के साथ भी इसे इसी तरह किया।

भाट, नट समुदाय

ये समुदाय राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों से भोपाल आकर बसे हैं। इनकी भाषा राजस्थानी



मारवाड़ी है। महिलाओं का पहनावा ख़ासतौर पर राजस्थानी है। एक या दो छोटे पक्के कमरों में यह अपने संयुक्त परिवार के साथ रहते हैं।

काम की बात की जाए तो यहाँ के पुरुष व लड़के त्योहारों व सांस्कृतिक-धार्मिक कार्यक्रमों में ढोल बजाने का काम करते हैं। इसके साथ ही घास के घोड़े-हाथी बेचने का काम करते हैं, जो यहाँ के पुरुष और महिलाएँ दोनों ही बनाते हैं। लकड़ी पर चेहरे बनाने के हुनर से भी कुछ पुरुष वाक़िफ़ हैं। एक और काम है जिसमें इस समुदाय के बच्चे भी माहिर हैं। वैसे यहाँ जिन कामों का ज़िक्र किया गया उन सबमें कहीं-न-कहीं बच्चों की शामिलियत रहती है, लेकिन बात जब कठपुतली के माध्यम से सन्देश देने की होती है तब बच्चे ख़ुशी के साथ इसे कर लेते हैं।

इन सब कामों की झलकियाँ, यहाँ का पारम्परिक नृत्य, बच्चों का सड़कों पर घूमते हुए काम करना तो कहीं किसी सड़क किनारे अपने सामान– घोड़े-हाथी, फूलदान– को क़रीने से जमाए बेचना, यह सब चित्रों के ज़रिए निकलकर आया।

पारधी समुदाय

इस समुदाय का मुख्य काम कबाड़ बीनने का रहा है। मेरे सम्पर्क में रहे बच्चों के अलावा भी यहाँ के बच्चे इस काम से जुड़े रहे हैं। इनके बुज़ुर्ग जंगलों में शिकार करने (शिकार



इस प्रक्रिया व सवालों में कुछ बदलाव करते हुए अगरिया समुदाय के कुछ किशोर और युवाओं के साथ भी गतिविधि की गई। इस पूरी प्रक्रिया को इन लोगों की नज़र से भी समझना चाहा।

विषय था– अपनी ज़िन्दगी को एक पेड़ के रूप में अभिव्यक्त करना। बहरहाल, उन्हें अपनी ज़िन्दगी का पेड़ बनाना था जिसमें वे पहलू दिख पाएँ जो उनसे जुड़े हैं। बारह साथी इस प्रक्रिया में शामिल रहे। कुछ सोचते हुए सभी अपने कामों में व्यस्त हो गए। मेरी कोशिश थी कि कोई किसी के पेड़ को न देख पाए, ताकि एक समान पेड़ न बने। कुछ समय बाद सभी समूह में आकर बैठे। आपसी सहमति के साथ एक-एक व्यक्ति अपने चित्र को सामने रखते हुए अपने साथियों से उसपर चर्चा कर रहा था।

पेड़ों की टहनियाँ आधी हैं। बनाने वाला उसकी व्याख्या करता है कि रिश्ते, चीज़ें मिलती तो हैं लेकिन अधूरी रह जाती हैं।

पेड़ों के अलग-अलग हिस्से से निकलते



का सामान बेचने), जड़ी-बूटी बेचने के काम से भी जुड़े रहे हैं जिसके चलते उस समय इनपर लगा अपराधी जाति का टैग आज तक इनके साथ चला आ रहा है। इसकी वजह से इनके आज के कामों को भी इस नज़र से देखते हुए पुलिस व अन्य लोगों के साथ इनकी मुश्किलें बनी ही रहती हैं। कुछ लोग मनिहारी के साथ ही मज़दूरी से जुड़े कुछ अन्य कामों को भी कर रहे हैं।

बस्ती की स्थिति को देखें तो एक छोटे-से कच्चे-पक्के कमरे में यह अपने परिवार के साथ रहते हैं। इसके साथ ही इनके द्वारा बीनकर लाया (छाँटकर रखा) सामान व कुछ पालतू जानवर भी होते हैं।

समुदाय के बच्चों के चित्रों में उनके कामों के साथ ही ज़िन्दगी में चल रही मुश्किलों की झलक भी देखने को मिली। आड़ी-तिरछी लाइनों के साथ गुदे हुए छोटे-छोटे चित्र भी मिले। ये गोदा-गादी उनकी जीवन परिस्थितियों, समाज के साथ संघर्ष और बेचैनी को भी दिखाती है।

वहीं दूसरी तरफ़ चित्रों के साथ ही इनमें किए गए रंगों की भी अपनी महत्ता है। जहाँ नट समुदाय के कई बच्चों के चित्रों में रंगों की भरमार रही वहीं पारधी समुदाय के कुछ बच्चों के चित्र बेरंग तो कुछ गहरे, दबे रंगों से सराबोर थे।

कोने अपने ऊपर लगे ग़लत आरोप के प्रति ग़ुस्सा ज़ाहिर कर रहे थे।

मज़बूत जड़ें उनके हौसले को दिखा रही थीं। छोटे-से पौधे को काँटों से घिरा दिखाना कहीं-न-कहीं उनकी ज़िन्दगी की तमाम मुश्किलों को बयाँ कर रहा था।

इन सबके परे कुछ ऐसे बच्चों से भी मिलना हुआ जो मज़हबी लड़ाई का हिस्सा रहे। इनके चित्रों में जलते घर, वीरान गलियाँ, किसी को मारते और रोते लोग दिखे।

चित्रों में बच्चों की पहल

बाल समूह (आज़ाद जुगनू क्लब) के कुछ प्रतिनिधि बच्चों ने बस्ती के बाक़ी बच्चों के साथ हिंसा से जुड़ा सर्वे करना तय किया। इस प्रक्रिया में दोनों तरह के बच्चे शामिल रहे जो स्कूल जाते हैं और जो स्कूल नहीं जा पाते व मुख्यत: आजीविका से जुड़े कामों में संलग्न हैं। कुछ सवाल बच्चों ने बनाए जिससे हिंसा के प्रकार और बच्चों पर हो रहे उसके असर को समझते हुए मिलकर उसपर काम किया जा सके।

जिन बच्चों को सवालों के जवाब देने में मुश्किल या झिझक हुई, उन्होंने चित्र के माध्यम से अपनी बात कही। इसमें घर, स्कूल, काम की जगह, बस्ती, थाना, पार्क, बाज़ार, खेल का मैदान शामिल रहे। ये सभी वे जगहें थीं जहाँ बच्चों के साथ हिंसा होती है। चित्र जिस भी तरह से बने थे लेकिन उनमें बच्चों की स्थिति समझ आ रही थी। इन चित्रों में मार खाते, रोते, ख़ुद को बचाते, तो कभी किसी और की मदद की जद्दोजहद में उलझे बच्चे नज़र आए।





कहना ग़लत नहीं होगा कि बच्चों या बड़ों द्वारा बनाई तस्वीरें उनके मन का आईना होती हैं, जिनमें उनकी ज़िन्दगी झलकती है। बोलने, लिखने के साथ ही चित्र भी किसी इंसान को समझने के लिए मदद करते है। शहरी वंचित तबक़े के कुछ समुदायों के बच्चों के साथ काम करने के दौरान मैं यह अनुभव कर पाई।

लेख के सभी चित्र बाल समूह आज़ाद जुगनू क्लब के बच्चों ने बनाए हैं।

रुबीना ख़ान 10 वर्षों से मुस्कान संस्था के साथ काम कर रही हैं। संस्था में शुरुआती तीन साल शहरी वंचित तबक़े के आदिवासी समुदाय ख़ासकर कामकाजी बच्चों के साथ शिक्षा पर काम किया। सात वर्षों से इन्हीं बस्तियों में यूनिसेफ़ के सहयोग से बच्चों की सुरक्षा और अधिकारों के लिए समुदाय व विभाग स्तर पर कार्य कर रही हैं। शिक्षा में दिलचस्पी होने से बच्चों के लिए पुस्तकालय व पढ़ने की गतिविधियों में भी शामिल रहती हैं।

सम्पर्क : khanrubina89@gmail.com